द्वारा लिखित लेखकमण्डल
शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2009 13:28 -

□□□ □□□, □□□ □□□□□□□

“□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□; □□□□, □□ □□ □□ □□ □□ □□□”□ (2□□□□□□□□□□□□ 5:17)

ज़िन्दगी के कैनवास पर मनुष्य अक्सर नवीनता और परिवर्तन चाहता है। ज़रूरी नहीं कि हर परिवेश में यह अच्छा ही हो, किन्तु नये वर्ष में अक्सर इस तरह की चर्चा होती है, संदेश होते हैं। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि स्वस्थ मानसिकता एवं प्रसन्नता के लिए आम जीवन की दिनचर्या और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में कुछ न कुछ परिवर्तन होना अच्छा होता है। इसी वजह से जो व्यस्त और सम्पन्न लोग होते हैं, अक्सर गर्मी की छुट्टियों में पहाड़ों पर चले जाते हैं, पर्यटन के स्थानों में जाकर एकान्त और तनावरहित वातावरण में अपना समय गुज़ारते हैं।

प्रभु यीशु मसीह ने सदैव आंतरिक परिवर्तन और आत्मिक नवीनता की बात कही है। संसार बाह्य अस्तित्व को देखता है किन्तु परमेश्वर हृदय को जांचता है। संसार की नज़र भौतिक वस्तुओं पर जाती है कि फलां व्यक्ति कैसे दिखता है, कैसे कपड़े पहनता है, किस तरह के घर में रहता है, कौन-कौन सी उपलब्धियां प्राप्त है इत्यादि-इत्यादि। ये बातें प्रमुख हो सकती है किन्तु प्राथमिक नहीं। प्राथमिक तो वही है, जो ईश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण है।

जीवन के प्रमुखतम- आधारभूत-ईश्वर प्रदत्त नियमों में से एक बात जो हमें सीखना है। कि हमारी उपलब्धियों, पदों और सोशल स्टेटस से बढ़कर प्रमुख बात यह है कि हम क्या है।

हमें भी अपने जीवनों में नवीनता लाना है और परिवर्तन करना है, किंतु यह किसी भौतिक उपलब्धि से नहीं होगा वरन् जीवन में नवीनता और परिवर्तन आएगा, प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं को जीवन में समाहित करने से, आत्मा के फल को अपने व्यवहार में उतारने से और अपने जीवन की बुराइयों को स्वीकार कर परमेश्वर के वचन से; उनकी प्रतिस्थापना करने से। इस आने वाले बरस में हमारे जीवन में भी ऐसी मसीही साक्षी हो कि लोग हमारे जीवन से प्रभु को देख सकें।

□□□□□□□□□□ :-पिता परमेश्वर, हमें ऐसी समझ दे कि इस आने वाले वर्ष में अपने जीवन की प्राथमिकताओं को समझने वाले हों और तेरे वचन के अनुसार जीवन जीने वाले हों। आमीन।